बादरआउ-बादरतेउ-बादरवाउणं पओअकम्म-समोदाणकम्माणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण तिसमऊणो अगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। तेसिं चेव बादरपज्जत्ताणं पओअकम्म-समोदाणकम्माणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण तिसमऊणाणि संखेज्जवस्ससहस्साणि। तेसिं चेव बादरेइंदियअपज्जत्ताणं पओअकम्म-समोदाणकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण तिसमऊणमंतोमुहुत्तं। सुहुमपुढवि-सुहुमआउ-सुहुमतेउ-सुहुमवाऊणं पुढविभंगो। तेसिं चेव सुहुमपज्जत्तापज्जत्ताणं पओअकम्म-समोदाणकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण तिसमऊणमंतोमुहुत्तं।

वणप्फदिकाइयाणं पओअकम्म-समोदाणकम्माणमंतरं केवचिरं कालादो होदि?

तीन समय कम असंख्यात लोकप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक जीवोंके प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणियोंके बराबर है। उन्हीं बादर पर्याप्तकोंके प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम एक हजार वर्ष है। उन्हीं बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा

अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त है।

वनस्पतिकायिक जीवोंके प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना

णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण अणंतो कालो तिसमऊणा असंखेज्जा पोग्गलपरिट्टा। बादरवणप्फदिकाइयाणं बादरपुढविभंगो। बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्तापज्जत्ताणं बादरपुढविपज्जत्तापज्जत्तभंगो। (सुहुमवणप्फदि (* आ-का-ता प्रतिषु 'सुहुमवणप्फदि' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते।)सुहुमवणप्फदिपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमपुढवि(*आ-का-ता प्रतिषु 'सुहुमपुढवि' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते।) सुहुमपुढविपज्जत्तापज्जताणं भंगो।

तसकाइयाणं पओअकम्म-समोदाणकम्माणं अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण तिसमऊणाणि बेसागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि (* अतोऽग्रे ता प्रतौ '(इरियावहकम्मस्स अंतरं केवचिरं? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्क० तिसमऊणाणि बेसागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि) इत्यधिकः पाठः कोष्ठकस्थोऽस्ति।)। इरियावहकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। कुदो? इरियावहकम्मेणच्छिदउवसंतकसायादो हेट्ठा (* आ-का-ता प्रतिषु '--कसाए हेट्ठा' इति पाठः।) ओदरिय अंतरिदूण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो उवसंतकसाए जादे संते इरियावहकम्मस्स जहण्ण अंतरुवलंभादो। उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि किंचूणपुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि।

जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है जो तीन समय कम असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनके बराबर है।

बादर वनस्पतिकायिक जीवोंके अन्तरकाल बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके समान है। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक, सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त और उन्हींके अपर्याप्त जीवोंके अन्तरकाल सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त और उन्हींके अपर्याप्त जीवोंके समान है।

त्रसकायिक जीवोंके प्रयोगकर्म और समवदानकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक दो हजार सागर है। ईर्यापथकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि, जो उपशान्तकषाय जीव ईर्यापथकर्मके साथ रहकर और नीचे उतरकर अन्तर करके सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल तक ठहरकर पुनः उपशान्तकषाय हो जाता है उसके ईर्यापथकर्मका जघन्य अन्तरकाल उपलब्ध होता है। उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक दो हजार सागर है, क्योंकि, अट्ठाईस कर्मोंकी सत्तावाला कोई एक

कुदो? एक्को अट्ठावीससंतकम्मियएइंदियो मणुस्सेसु उववण्णो, गब्भादिअट्ठवस्साणमुवरि वेदगसम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवण्णो, अणंताणुबंधिं विसंजोइय दंसणमोहणीयमुवसामिय पुणो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण अपुव्व-अणियट्टि(* प्रतिषु 'अणियट्टी' इति पाठः।)-सुहुमउवसंतो जादो, इरियावहकम्मस्स आदी ट्ठिदा। पुणो सुहुमो होदूणंतरिदो। तदो बेसागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि अंतरिय सव्वजहण्णंतोमुहुत्तावसेसे सिज्झिदव्वए त्ति खीणकसाओ जादो। लद्धमंतरं इरियावहकम्मस्स। तदो अजोगी होदूण सिद्धो जादो। एवं गब्भादिअट्ठवस्सेहि एक्कारसअंतोमुहुत्तब्भहिएहि ऊणउक्कस्संतसट्ठिदिमेत्तअंतरुवलंभादो। तवोकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि किंचूणपुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। तं जहा -- एक्को अट्ठावीससंतकम्मियएइंदयो मणुस्सेसु उववण्णो। गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि विसोहि(* अ-आ-का प्रतिषु 'विसेसोहिं' इति पाठः।) पूरेदूण वेदगसम्मत्तं संजमं च पूरेदूण वेदगसम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवण्णो। तवोकम्मस्स आदी दिट्ठा। तदो सव्वलहुमंतोमुहुत्तमच्छिय

मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। तदो बेसागरोवमसहस्साणं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणं सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तावसेसे उवसमसम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवण्णो। लद्धमंतरं तवोकम्मस्स। पुणो उवसमसम्मत्तद्धाए अब्भंतरे आसाणं गंतूण मदो एइंदियो जादो। एवं गब्भादिअट्ठवस्सेहि

एकेन्द्रिय जीव मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और गर्भसे लेकर आठ वर्षका होनेपर वेदकसम्यक्त्व और संयमको एक साथ प्राप्त हुआ। अनन्तर अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना कर और दर्शनमोहनीयको उपशमाकर अनन्तर प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानके हजारों परिवर्तन करके अपूर्व उपशामक, अनिवृत्ति उपशामक, सूक्ष्मउपशामक और उपशान्तकषाय हुआ। इसके ईर्यापथकर्मकी आदि दिखायी दी। फिर सूक्ष्मसाम्पराय होकर इसका अन्तर किया। अनन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक दो हजार सागर कालका अन्तर देकर सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त कालके शेष रहनेपर सिद्ध होगा, इसलिए क्षीणकषाय हुआ। इस प्रकार ईर्यापथकर्मका अन्तरकाल उपलब्ध होता है। अनन्तर योगी और अयोगी होकर सिद्ध हुआ। इस प्रकार गर्भसे लेकर आठ वर्ष और ग्यारह अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट त्रसस्थितिप्रमाण उत्कृष्ट अन्तरकाल उपलब्ध होता है। तपःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक दो हजार सागर है। यथा -- अट्ठाईस कर्मोंकी सत्तावाला कोई एक एकेन्द्रिय जीव मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। गर्भसे लेकर आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्तका होनेपर विशुद्धिको प्राप्त होकर वेदकसम्यक्त्व और संयमको एक साथ प्राप्त हुआ। इसके तपःकर्मका प्रारम्भ दिखायी दिया। अनन्तर सबसे लघु अन्तर्मुहूर्त काल तक उसके साथ रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हो उसका अन्तर किया। अनन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक दो हजार सागर प्रमाण कालमें सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर उपशमसम्यक्त्व और संयमको एक साथ प्राप्त हुआ। इस प्रकार तपःकर्मका अन्तरकाल लब्ध होता है। पुनः उपशमसम्यक्त्वके कालके भीतर सासादन गुणस्थानको

दो अंतोमुहुतब्भहिएहि ऊणिया सगट्ठिदी तवोकम्मुक्कस्संतरं। किरियाकम्मस्संतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं।

उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि किंचूणपुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। कुदो? एक्को अट्ठावीससंतकम्मियएइंदियो सण्णिपंचिंदियसमुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो विस्संतो विसुद्धो वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो। किरियाकम्मस्स आदी द्दिदा। सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तं किरियाकम्मेणच्छिय मिच्छत्तं गदो अंतरिदो। बेसागरोवमसहस्साणं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणं सव्वजहण्णंतोमुहुत्तावसेसे उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो। किरियाकम्मस्स लद्धमंतरं। पुणो सासणं गंतूण मदो एइंदियो जादो। एवं पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणसगद्धंत्तंतरुवलंभादो। एवं तसपज्जत्तयस्स वि। णवरि जम्हि बेसागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि भाणिदाणि तम्हि बेसागरोवमसहस्साणि त्ति वत्तव्वं।

तसअपज्जत्ताणं पओअकम्म-समोदाणकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्संतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण असीदि-सट्ठि-ताल-चदुवीसभवमेत्तअंतोमुहुत्ताणं

प्राप्त होकर मरा और एकेन्द्रिय हुआ। इस प्रकार गर्भसे लेकर आठ वर्ष और दो अन्तर्मुहूर्त कम अपनी स्थिति तपःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है। क्रियाकर्मका अन्तरकाल कितना होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक दो हजार सागर है, क्योंकि, अट्ठाईस कर्मोंकी सत्तावाला कोई एक एकेन्द्रिय संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव सम्मूर्च्छन पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ। छह पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो, विश्राम करके और विशुद्ध होकर वेदकसम्यक्तको प्राप्त हुआ। इसके क्रियाकर्मका प्रारम्भ दिखायी दिया। अनन्तर सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल तक क्रियाकर्मके साथ रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हो उसका अन्तर किया। अनन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक दो हजार सागरमें सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ। इस प्रकार क्रियाकर्मका काल लब्ध होता है। पुनः सासादन गुणस्थानको प्राप्त होकर मरा और एकेन्द्रिय हो गया। इस प्रकार पाँच अन्तर्मुहूर्त कम अपनी उत्कृष्ट स्थिति क्रियाकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल उपलब्ध हुआ।

इसी प्रकार त्रस पर्याप्तकोंके भी जानना चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि जहाँ पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक दो हजार सागर अन्तरकाल कहा है वहाँपर दो हजार सागरप्रमाण अन्तरकाल कहना चाहिए।

त्रस अपर्याप्तक जीवोंके प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अंतरकाल नहीं है। अधःकर्मका अंतरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अस्सी, साठ, चालीस और चौबीस भवप्रमाण संख्यात अन्तर्मुहूर्तोंके समूहसे तीन समय कम

संखेज्जाणं समूहो तिसमऊणो (* ता प्रतौ 'समूहो त्ति समऊणो' इति पाठः।)। तं जहा -- एक्को एइंदियो तसअपज्जत्तएसु उववण्णो। तत्थ उप्पण्णपढमसमए उववादजोगेण ओरालियसरीरणिमित्तं जे गहिदा परमाणू तेसिं बिदियसमए णिज्जिण्णाणं आधाकम्मस्स आदी होदि। पुणो तदियसमयप्पहुडि ताव (* प्रतिषु 'प्पहुडि जाव ताव' इति पाठः।) अंतरं होदूण गच्छदि जाव संखेज्जअसीदि-सट्ठि-दाल-चदुवीसअपज्जत्तभवाणमंतोमुहुत्तकालाणं (अ-आ-का प्रतिषु '-- मंतोमुहुत्तो कालाणं', ता प्रतौ 'मंतोमुहुत्तो (त्तं) कालाणं' इति पाठः।) दुचरिमसमओ त्ति। पुणो चरिमसमए तेसु चेव पुणो णिज्जिण्णणोकम्म(* अ-आ-का प्रतिषु 'णिज्जिण्णोकम्म' इति पाठः।)क्खंधेसु बंधमागदेसु आधाकम्मस्स लद्धमंतरं होदि।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीणं सव्वपदाणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। णवरि आधाकम्मस्स एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं तिसमऊणं। एवं कायजोगिस्स। णवरि आधाकम्मस्स अंतरं एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण अणंतो कालो तिसमऊणो असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। ओरालियकायजोगीसु एवं चेव। णवरि आधाकम्मस्स अंतरं एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण बावीसवस्ससहस्साणि तिसमयाहियअंतोमुहुत्तूणाणि। तं जहा -- एक्को तिरिक्खो वा मणुस्सो वा बादरपुढविकाइयपज्जत्तएसु उववण्णो। चदुहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदपढमसमए जे गहिदा परमाणू तेसिं बिदियसमए

है। यथा --एक एकेन्द्रिय जीव त्रस अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ उत्पन्न होनेके पहले समयमें उपपाद योगके द्वारा औदारिक शरीरके निमित्त जो पुद्‌गलपरमाणु ग्रहण किये उनके दूसरे समयमें निर्जीर्ण हो जानेपर अधःकर्मका प्रारम्भ होता है। पुनः तीसरे समयसे लेकर अस्सी, साठ, चालीस और चौबीस अपर्याप्त भवप्रमाण संख्यात अन्तर्मुहूर्तोंके द्विचरम समय तक उसका अन्तर रहता है। पुनः अन्तिम समयमें उन्हीं निर्जीर्ण हुए कर्मस्कन्धोंके पुनः बन्धको प्राप्त होनेपर अधःकर्मका अन्तरकाल लब्ध होता है।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँच मनोयोगी और पाँच वचनयोगी जीवोंके सब पदोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। इतनी विशेषता है कि अधःकर्मका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार काययोगीके जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अधःकर्मका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्‌गलपरिवर्तनके बराबर है। औदारिक काययोगियोंमें इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अधःकर्मका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय और अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्ष है। यथा -- कोई एक तिर्यंच या मनुष्य बादर पृथ्वीकायिक पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ। चार पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होनेपर अनन्तर प्रथम समयमें जो परमाणु ग्रहण किये उनके दूसरे समयमें निर्जीर्ण होनेपर अधःकर्मकी आदी होती है। पुनः तीसरे समयसे लेकर

णिज्जिण्णाणमाधाकम्मस्स आदी होदि। तदियसमयप्पहुडि अंतरं होदूण ताव गच्छदि जाव बावीसवस्ससहस्साणं (* प्रतिषु 'सहस्साणि' इति पाठः।) दुचरिमसमओ त्ति। पुणो चरिमसमए पुव्विल्लक्खंधेसु बंधमागदेसु लद्धमंतरं होदि। एवं तिसमयाहिअंतोमुहुत्तेण ऊणाणि बावीसवस्ससहस्साणि आधाकम्मस्स उक्कस्संतरं होदि।

बाईस हजार वर्षके द्विचरम समय तक उनका अन्तर रहता है। पुनः अन्तिम समयमें पूर्वोक्त कर्मस्कन्धोंके बन्धको प्राप्त होनेपर अन्तरकाल लब्ध होता है। इस प्रकार अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय और अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्ष होता है।

ओरालियमिस्सकायजोगिस्स पओअकम्म-समोदाणकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण तिसमऊणमंतोमुहुत्तं। तं जहा -- एक्को सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासिदेवो उजुगदीए आगंतूण मणुस्सेसु उववण्णो। तत्थ उववादजोगेण जे पढमसमए गहिदा णोकम्मक्खंधा तेसिं बिदियसमए णिज्जिण्णाणमादी होदि। तदो तदियसमयप्पहुडि अंतरं होदूण पुणो दीहेण अंतोमुहुत्तेण पज्जत्तयदो होहदि त्ति तस्स चरिमसमए लद्धमंतरं। एवं तिसमऊणंतोमुहुत्तं आधाकम्मुक्कस्संतरं होदि। इरियावहतवोकम्माणं अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण वासपुधत्तं। जहा णिव्वुइमुवगमंताणं (* अ-आ-का प्रतिषु '-- मुवणमंताणं', ता प्रतौ 'मुवगमणंताणं' इति पाठः।) छम्मासमुक्कस्संतरं होदि तहा केवलिसमुग्घादं करेंताणं पि छम्मासमेत्तमुक्कस्समंतरं किण्ण जायदे? ण एस दोसो, सव्वेसिं णिव्वुइमुवगमंताणं (* अ-आ-ता प्रतिषु 'णिव्वुइगमणुवमंताणं', का प्रतौ 'णिव्वइगमणुवगंताणं' इति पाठः।) केवलिसमुग्घादाभावादो। जदि अत्थि तो छम्मासमंतरं पि होज्ज।

बाईस हजार वर्षके द्विचरम समय तक उनका अन्तर रहता है। पुन: अन्तिम समयमें पूर्वोक्त कर्मस्कन्धोंके बन्धको प्राप्त होनेपर अन्तरकाल लब्ध होता है। इस प्रकार अध:प्रकार उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय और अन्तमुहुर्त कम बाईस हजार वर्ष होता है।

औदारिक मिश्र काययोगीके प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है। और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त है। यथा -- एक सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव ऋजुगतिसे आकर मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ उपपाद योगसे प्रथम समयमें जो नोकर्मस्कन्ध ग्रहण किये उनके दूसरे समयमें निर्जीर्ण होनेपर अधःकर्मकी आदि होती है। अनन्तर तीसरे समयसे लेकर अन्तर होकर पुनः दीर्घ अन्तर्मुहूर्तके द्वारा पर्याप्त होगा, इस प्रकार उसके अन्तिम समयमें अन्तर प्राप्त होता है। इस प्रकार अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त

होता है। ईर्यापथ कर्म और तपःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्व है।

शंका -- जिस प्रकार मोक्षको जानेवाले जीवोंका छह महीना उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है उसी प्रकार केवलिसमुद्घात करनेवालोंका भी छह महीनाप्रमाण उत्कृष्ट अन्तर क्यों नहीं होता?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मोक्ष जानेवाले सभी जीवोंके केवलिसमुद्घात नहीं होता। यदि मोक्ष जानेवाले सभी जीवोंके केवलिसमुद्घात होता तो छह मासप्रमाण

केवलिसमुग्घादेण विणा कधं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदीए घादो जायदे? ण, ट्ठिदिखंडयघादेण तग्घादुववत्तीदो। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। किरियाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एकसमओ। उक्कस्सेण वासपुधत्तं। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं।

एवं कम्मइयकायजोगिस्स। णवरि आधाकम्मस्स णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण वासपुधत्तं। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। वेउव्वियकायजोगीसु सव्वपदाणं णत्थि अंतरं। वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु पओअकम्म-समोदाणकम्माणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण बारसमुहुत्ताणि। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। किरियाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण वासपुधत्तं। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आहार-आहारमिस्सकायजोगीणं सव्वपदाणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण वासपुधत्तं। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदाणं पओअकम्म-समोदाणकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि

अन्तरकाल भी प्राप्त होता।

शंका -- जिन जीवोंके केवलिसमुद्घात नहीं होता उनके केवलिसमुद्घात हुए बिना पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितिका घात कैसे होता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, स्थितिकाण्डकघातके द्वारा उक्त स्थितिका घात बन जाता है। उक्त दोनों कर्मोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। क्रियाकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्व है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है।

इसी प्रकार कार्मणकाययोगियोंके जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अधःकर्मका नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्व है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। वैक्रियिककाययोगियोंके सब पदोंका अन्तरकाल नहीं है। वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंके प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल बारह मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। क्रियाकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल मासपृथक्त्व है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। आहारकाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंके सब पदोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्व है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदवालोंके प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना

अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण तिसमऊणपलिदोवमसदपुधत्तं। तवोकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं। तं जहा -- एक्को पुरिसवेदो णवुंसयवेदो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ इत्थिवेदमणुस्सेसु उववण्णो। गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि वेदगसम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवण्णो। तवोकम्मस्स आदी दिट्ठा। सव्वलहुं तवोकम्मेण अच्छिदूण मिच्छत्तं गदो अंतरिदो। पलिदोवमसदपुधत्तस्स सव्वजहण्णंतोमुहुत्तावसेसे उवसमसम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवण्णो। तवोकम्मस्स लद्धमंतरं। पुणो उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमयावसेसाए आसाणं गंतूणं मदो पुरिसवेदो देवो जादो। एवं गब्भादि-अट्ठवस्सेहि बेअंतोमुहुत्तब्भहिएहि ऊणिया सगदिट्ठी तवोकम्मस्स उक्कस्संतरं होदि।

किरियाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणं पलिदोवमसदपुधत्तं। तं जहा -- एक्को तिरिक्खो वा मणुस्सो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ पुरिस-णवुंसयवेदो देवेसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो। विस्संतो विसुद्धो वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो। किरियाकम्मस्स आदी दिट्ठा। तदो मिच्छत्तं गंतूण अंतरिदो। पुणो पलिदोवमसदपुधत्ते सव्वजहण्णअंतोमुहुत्तावसेसे उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो। किरियाकम्मस्स लद्धमंतरं। तदो सासणं गंतूण मदो

जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम सौ वर्षपृथक्त्व है। तपःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम सौ पल्यपृथक्त्व है। यथा -- अट्ठाईस कर्मोंकी सत्तावाला एक पुरुषवेदी या नपुंसकवेदी जीव स्त्रीवेदवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। गर्भसे लेकर अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्षका होनेपर वेदकसम्यक्त्व और संयमको एक साथ प्राप्त हुआ। इसके तपःकर्मकी आदि दिखाई दी। अनन्तर सबसे लघु (अन्तर्मुहूर्त) काल तक तपःकर्मके साथ रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ और उसका अन्तर किया। अनन्तर सौ पल्यपृथक्त्वमें सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर उपशमसम्यक्त्व और संयमको एक साथ प्राप्त हुआ। इसके तपःकर्मका अन्तरकाल लब्ध हो गया। पुनः उपशमसम्यक्त्वके कालमें एक समय शेष रहनेपर सासादन गुणस्थानको प्राप्त होकर मरा और पुरुषवेदवाला देव हुआ। इस प्रकार गर्भसे लेकर दो अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्ष कम अपनी स्थिति तपःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है। क्रियाकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कम सौ पल्यपृथक्त्व है। यथा -- अट्ठाईस कर्मोंकी सत्तावाला पुरुषवेदी या नपुंसकवेदी एक तिर्यंच या मनुष्य देवोंमें उत्पन्न हुआ। छह पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ। विश्राम किया, विशुद्ध हुआ और वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ। इसके क्रियाकर्मकी आदि दिखाई दी। अनन्तर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर उसका अन्तर किया। अनन्तर सौ पल्यपृथक्त्वमें सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल शेष

रहनेपर उपशम सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ। क्रियाकर्मका अन्तर लब्ध हो गया। अनन्तर सासादन गुणस्थानको प्राप्त

पुरिस-णवुंसयवेदो जादो। एवं पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया सगदिट्ठी किरियाकम्मस्स उक्कस्संतरं होदि।

पुरिसवेदाणं पओअकम्म-समोदाणकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण तिसमऊणं सागरोवमसदपुधत्तं। तवोकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं। तं जहा -- एक्को इत्थिणवुंसयवेदो अट्ठावीससंतकम्मिओ पुरिसवेदेण मणुस्सेसु उववण्णो। गब्भआदिअट्ठवस्साणमुवरि वेदगसम्मत्तं संजमं च समयं पडिवण्णो। तवोकम्मस्स आदी दिट्ठा। सव्वलहुं तवोकम्मेण अच्छिदूण मिच्छत्तं गदो अंतरिदो। तदो सागरोवमसदपुधत्तेण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तावसेसे उवसमसम्मत्तं संजमं च पडिवण्णो। तवोकम्मस्स लद्धमंतरं। पुणो सासणं गंतूण मदो इत्थिवेदो णवुंसयवेदो वा जादो। एवं गब्भादिअट्ठवस्सेहि अंतोमुहुत्तब्भहिएहि ऊणिया सगदिट्ठी तवोकम्मस्स उक्कस्संतरं होदि। किरियाकम्मस्संतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं देसूणं। तं जहा -- एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ इत्थिवेदो णवुंसयवेदो वा कालं कादूण देवेसु पुरिस

होकर मरा और पुरुषवेदी या नपुंसकवेदी हो गया। इस प्रकार पाँच अन्तर्मुहूर्त कम अपनी स्थिति क्रियाकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है।

पुरुषवेदवाले जीवोंके प्रयोगकर्म और समवदानकर्मका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम सौ सागरपृथक्त्व है। तपःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना

जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सौ सागरपृथक्त्व है। यथा -- अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक स्त्रीवेदी या नपुंसकवेदी जीव पुरुषवेदके साथ मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ गर्भसे लेकर आठ वर्षका होनेपर वेदकसम्यक्त्व और और संयमको एक साथ प्राप्त हुआ। इसके तपःकर्मकी आदि दिखाई दी। अनन्तर सबसे थोड़े काल तक तपःकर्मके साथ रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ। तपःकर्मका अन्तर किया। तदनन्तर सौ सागरपृथक्त्वमें सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर उपशमसम्यक्त्व और संयमको (एक साथ) प्राप्त हुआ। तपःकर्मका अन्तर प्राप्त हो गया। अनन्तर सासादन गुणस्थानको प्राप्त होकर मरा और स्त्रीवेद या नपुंसकवेदी हो गया। इस प्रकार गर्भसे लेकर अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्ष कालसे न्यून अपनी स्थिति तपःकर्मका उत्कृष्ट अन्तर होता है। क्रियाकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम सौ सागरपृथक्त्व है। यथा -- अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला स्त्रीवेदी या नपुंसकवेदी

वेदेण उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो विस्संतो विसुद्धो वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो। किरियाकम्मस्स आदी दिट्ठा। सव्वलहुं किरियाकम्मेण अच्छिदूण मिच्छत्तं गदो अंतरिदो। तदो सागरोवमसदपुधत्ते सव्वजहण्णअंतोमुहुत्तावसेसे उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो। किरियाकम्मस्स लद्धमंतरं। पुणो आसाणं गंतूण मदो इत्थिवेदो णवुंसयवेदो वा जादो। एवं पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया सगदिट्ठी किरियाकम्मस्स उक्कस्संतरं होदि।

णवुंसयवेदाणं पओअकम्म-समोदाणकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण अणंतो कालो तिसमऊणो असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। एक्केण पोग्गलपरियट्टेण चेव होदव्वं, पोग्गलपरियट्टादो उवरि अच्छणं पडि संभवाभावादो ? ण एस दोसो, अप्पिदजीवं मोत्तूण अण्णजीवेहि (* ता प्रतौ 'अण्णजीवेण' इति पाठः) सह आधाकम्मेण परिणदाणं (* प्रतिषु 'परिदाणं' इति पाठः) पि णोकम्मक्खंधाणं अंतराभावो ण होदि त्ति कादूण असंखेज्जाणं पोग्गलपरियट्टाणं संभवं पडि विरोहाभावादो। तवोकम्मकिरियाकम्माणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं।

उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। तं जहा -- एक्को अणादियमिच्छाइट्ठी णवुंसयवेदेण मणुस्सेसु उववण्णो। तदो अद्धपोग्गलपरियट्टस्स

एक जीव मरकर पुरुषवेदके साथ देवोंमें उत्पन्न हुआ। छह पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ , विश्राम किया और विशुद्ध होकर वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ। क्रियाकर्मकी आदि दिखाई दी। पुनः अति स्वल्प काल तक क्रियाकर्मके साथ रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ। क्रियाकर्मका अन्तर किया। अनन्तर सौ सागरपृथक्त्वमें सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ। क्रियाकर्मका अन्तर प्राप्त हो गया। अनन्तर सासादन गुणस्थानको प्राप्त होकर मरा और स्त्रीवेदी या नपुंसकवेदी हो गया। इस प्रकार पाँच अन्तर्मुहूर्त कम अपनी स्थिति क्रियाकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है।

नपुंसकवेदवाले जीवोंके प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल तीन समय कम अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनके बराबर है।

शंका -- एक पुद्गलपरिवर्तन ही उत्कृष्ट अन्तरकाल होना चाहिए, क्योंकि, एक पुद्गलपरिवर्तनके बाद उस जीवका वहाँ रहना सम्भव नहीं है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विवक्षित जीवको छोड़कर अन्य जीवोंके साथ अधःकर्मरूपसे परिणत हुए नोकर्मस्कन्धोंका भी अन्तराभाव नहीं होता, ऐसा समझकर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अन्तरकाल माननेमें कोई विरोध नहीं आता है।

तपःकर्म और क्रियाकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है। यथा -- एक अनादि मिथ्यादृष्टि जीव नपुंसकवेदके साथ मनुष्योंमें

बाहिं अट्ठवस्साणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि गमेदूण अद्धपोग्गलपरियट्टस्स पढमसमए उवसमसम्मत्तं संजमं च समयं पडिवण्णो। तवोकम्म-किरियाकम्माणमादी दिट्ठा। पुणो उवसमसम्मत्तद्धाए छ आवलिया अत्थि त्ति आसाणं गंतूणंतरिदो। पुणो अद्ध पोग्गलपरियट्टस्स

सव्वजहण्णअंतोमुहुत्तावसेसे (* ता प्रतौ '--सेस' इति पाठः।) तिण्णि वि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं संजमं च पडिवण्णो। तवोकम्म-किरियाकम्माणं लद्धमंतरं। तदो अणंताणुबंधिं विसंजोएदूण वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो। तदो अंतोमुहुत्तेण खइयसम्माइट्ठी जादो। तदो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण अपुव्व० अणियट्टि० सुहुमसांपराइय० खीणकसाय० सजोगी अजोगी होदूण सिद्धो जादो। एवं णवुंसयवेदस्स तवोकम्म-किरियाकम्माणं बारसेहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणयमद्दपोग्गलपरियट्टमुक्कस्संतरं होदि।

अवगदवेदाणं पओअकम्म-समोदाणकम्म-इरियावहकम्म-तवोकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। तं जहा -- एक्को देवो वा णेरइओ वा खइयसम्माइट्ठी पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। तदो गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवण्णो। पुणो पमत्तो जादो। तदो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण अपुव्व-अणियट्टि गुणट्ठाणम्मि संखेज्जे भागे

उत्पन्न हुआ। अनन्तर अर्धपुद्‌गलपरिवर्तनके बाहर अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्ष बिताकर अर्धपुद्‌गलपरिवर्तनके प्रथम समयमें उपशमसम्यक्त्व और संयमको एक साथ प्राप्त हुआ। इसके तपःकर्म और क्रियाकर्मकी आदि दिखाई दी। पुनः उपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलि काल शेष रहनेपर सासादन गुणस्थानको प्राप्त होकर इन दोनोंका अन्तर किया। अनन्तर अर्धपुद्‌गलपरिवर्तन कालमें सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर तीनों ही करणोंको करके उपशमसम्यक्त्व और संयमको प्राप्त हुआ। तपःकर्म और क्रियाकर्मका अन्तर प्राप्त हो गया। अनन्तर अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना करके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ। अनन्तर अन्तर्मुहूर्तमें क्षायिक सम्यग्दृष्टि हो गया। अनन्तर प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानोंके हजारो परावर्तन करके अपूर्वक्षपक, अनिवृत्तिक्षपक, सूक्ष्मसाम्परायक्षपक, क्षीणमोह, सयोगी और अयोगी होता हुआ सिद्ध हो गया। इस प्रकार नपुंसकवेदवालेके तपःकर्म और क्रियाकर्मका बारह अन्तर्मुहूर्त कम अर्धपुद्‌गलपरिवर्तन उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है।

अपगतवेदवाले जीवोंके प्रयोगकर्म, समवदान कर्म, ईर्यापथकर्म और तपःकर्मका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना

जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम पूर्वकोटिप्रमाण है। यथा -- एक देव या नारकी क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। अनन्तर गर्भसे लेकर आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्तके बाद अप्रमत्तभावसे संयमको प्राप्त हुआ। अनन्तर प्रमत्त हुआ। अनन्तर प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानोंके हजारों परावर्तन करके अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके

गंतूण अस्सकण्णकरणकारयस्स पढमसमए जे णिज्जिण्णा ओरालियसरीरपरमाणू तेसिं बिदियसमए आधाकम्मस्स आदी होदि। तदो तदियसमयप्पहुडि अकम्मभावेण गदाणं परमाणूणमंतरं होदूण गच्छदि जाव पुव्वकोडिम्मि अजोगिमेत्तद्धा सेसा त्ति। तदो सजोगिचरिमसमए तेसु चेव णोकम्मक्खंधेसु बंधमागदेसु आधाकम्मस्स लद्धमंतरं होदि। एवं गब्भादिअट्ठवस्सेहि छअंतोमुहुत्तब्भहिएहि ऊणिया पुव्वकोडी आधाकम्मस्स उक्कस्संतरं होदि।

कसायाणुवादेण चदुण्णं कसायाणं मणजोगिभंगो। अकसाईणमवगदवेदभंगो। णवरि खीणकसायपढमसमए जे णिज्जिण्णा ओरालियपरमाणू तेसिं बिदियसमए आधाकम्मस्स आदी कायव्वा। एवं केवलणाण-केवलदंसणाणं पि वत्तव्वं। णवरि सजोगिपढमसमए णिज्जिण्णाणमोरालियपरमाणूणं बिदियसमए आधाकम्मस्स आदी कायव्वा।

णाणाणुवादेण मदि-सुद-अण्णाणीणं तिरिक्खोघभंगो। णवरि किरियाकम्मं णत्थि। एवमभवसिद्धिय-मिच्छाइट्ठिअसण्णीणं पि वत्तव्वं। एवं विभंगणाणीणं पि(* का-ता प्रत्योः 'पि' इत्येतत्पदं नास्ति)। णवरि आधाकम्मस्स एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं तिसमऊणं। तं जहा -- एक्को तिरिक्खो वा मणुस्सो वा उवसमसम्माइट्ठी उवसमसम्मत्तद्धा छआवलियाओ अत्थि त्ति आसाणं विभंगणाणं च समयं पडिवण्णो। तत्थ विभंगणाणुप्पण्णपढमसमए जे

संख्यात भाग जानेपर अश्वकर्ण करणका कर्ता होकर उसके प्रथम समयमें जो औदारिक शरीरके परमाणु निर्जीर्ण हुए उनके दूसरे समयमें अधःकर्मकी आदि होती है। अनन्तर तीसरे समयसे लेकर अकर्मभावको प्राप्त हुए उन परमाणुओंका अन्तरकाल होता है जो पूर्वकोटिमें

अयोगीमात्र काल शेष रहनेतक रहता है। इस प्रकार गर्भसे लेकर आठ वर्ष और छह अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्वकोटि अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है।

कषायमार्गणाके अनुवादसे चारों कषायोंका कथन मनोयोगियोंके समान है। अकषायवालोंका कथन अपगतवेदवालोंके समान है। इतनी विशेषता है कि क्षीणकषायके प्रथम समयमें जो औदारिकशरीरके नोकर्मपरमाणु निर्जीर्ण हुए उनके दूसरे समयमें अधःकर्मकी आदि करना चाहिए। इसी प्रकार केवलज्ञान और केवल दर्शनवालोंके भी कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सयोगीके प्रथम समयमें निर्जीर्ण हुए औदारिक शरीरके परमाणुओंके दूसरे समयमें अधःकर्मकी आदि करना चाहिए।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंका कथन सामान्य तिर्यंचोंके समान है। इतनी विशेषता है कि इनके क्रियाकर्म नहीं होता। इसी प्रकार अभव्यसिद्ध, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञियोके भी कहना चाहिए। इसी प्रकार विभंगज्ञानियोंके भी जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अधःकर्मका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अंतरकाल तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त है। यथा -- एक तिर्यंच या मनुष्य उपशमसम्यग्दृष्टि जीव उपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलि काल शेष रहनेपर सासादन और विभंगज्ञानको एक

णिज्जिण्णा ओरालियसरीरपरमाणू तेसिं बिदियसमए आधाकम्मस्स आदी होदि। तदियसमयप्पहुडि ताव अंतरं जाव सासणकालो सव्वो मिच्छाइट्ठिम्हि (* अ आ का प्रतिषु 'मिच्छाइट्ठीहि', ता प्रतौ 'मिच्छाइट्ठी(ट्ठि)(हि)' इति पाठः।) विभंगणाणसव्वुक्कस्सकालस्स दुचरिमसमओ त्ति। तदो विभंगणाणकालचरिमसमए तेसु चेव पुव्वणिज्जिण्णओरालियसरीरणोकम्मक्खंधेसु बंधमागदेसु आधाकम्मस्स उक्कस्संतरं होदि। एवं तिसमऊणछआवलियाओ मिच्छाइट्ठिसव्वुक्कस्सविभंगणाणद्धा च आधाकम्मस्स उक्कस्संतरं होदि।

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु पओअकम्म-समोदाणकम्माणं केवचिरं कालादो होदि? णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण णवणउदिसागरोवमाणि

सादिरेयाणि। तं जहा -- एक्को मिच्छाइट्ठी पुव्वकोडाउएसु कुक्कुड-मक्कडेसु (* प्रतिषु 'मक्कुडेसु' इति पाठः) सण्णिपंचिंदियपज्जत्तएसु उववण्णो। तत्थ बेमासाणं दिवसपुधत्तेणब्भहियाणमुवरि तिण्णि वि करणाणि कादूणुवसमसम्मत्तमोहिणाणं मदि-सुदणाणाविणाभाविणं पडिवण्णो। तत्थ तिण्णाणपढमसमए जे णिज्जिण्णा ओरालियपरमाणू तेसिं बिदियसमए आधाकम्मस्स आदी होदि। तदो तदियप्पहुडि देसूणपुव्वकोडी अंतरं होदूण पुणो ओहिणाणेण सह तिरिक्काउएणूणचोद्दससागरो

साथ प्राप्त हुआ। यहाँ विभंगज्ञानके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें जो औदारिक शरीरके परमाणु निर्जीर्ण हुए उनके दूसरे समयमें अधःकर्मकी आदि होती है। और तीसरे समयसे लेकर सासादनका सब काल बिताकर मिथ्यादृष्टिके विभंगज्ञानके सर्वोत्कृष्ट कालके द्विचरम समयके प्राप्त होने तक अन्तर होता है। अनन्तर विभंगज्ञानके कालके अन्तिम समयमें उन्हीं पूर्वनिर्जीर्ण औदारिक शरीरके नोकर्मस्कन्धोंके बन्धको प्राप्त होनेपर अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तर होता है। इस प्रकार तीन समय कम छह आवलि काल और मिथ्यादृष्टिके सर्वोत्कृष्ट विभंगज्ञानका काल, ये दोनों मिलकर अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक निन्यानवे सागर है। यथा -- एक मिथ्यादृष्टि जीव पूर्वकोटिकी आयुवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कुक्कुड पक्षी और मर्कटोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ दिवसपृथक्त्व अधिक दो माह होनेपर तीनों ही करणोंको करके उपशम सम्यक्त्वको और आभिनिबोधिक ज्ञान एवं श्रुतज्ञानके साथ अवधिज्ञानको प्राप्त हुआ। वहाँ तीन ज्ञानके प्रथम समयमें जो औदारिक शरीरके परमाणु निर्जीर्ण हुए उनके दूसरे समयमें अधःकर्मकी आदि होती है। अनन्तर तीसरे समयसे लेकर कुछ कम कोटिप्रमाण अन्तर होकर पुनः अवधिज्ञानके साथ तिर्यंचायुसे न्यून चौदह सागरकी स्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। पुनः अवधिज्ञानके

वमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो। पुणो ओहिणाणेण सहिदपुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। पुणो मणुस्साउएणूणबावीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो समाणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। पुणो मणुस्साउएण अण्णेहि अंतोमुहुतब्भहियगब्भादिअट्ठवस्सेहि य ऊणतीससागरोवमट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो संतो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। तत्थ गब्भादिअट्ठवस्साणमुवरि तिण्णि वि करणाणि कादूण खइयसम्माइट्ठी जादो। पुणो देसूणपुव्वकोडी ओहिणाणेण सह संजममणुपालेदूण तेत्तीससागरोवमट्ठिदियो देवो जादो। तत्तो चुदो समाणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। तत्थ एदिस्से पुव्वकोडीए सव्वजहण्णंतोमुहुत्तावसेसे खीणकसाओ जादो। तस्स खीणकसायस्स चरिमसमए पुव्वं णिज्जिण्णपरमाणूसु बंधमागदेसु आधाकम्मस्स लद्धमंतरं होदि। एवमाभिणि-सुद-ओहिणाणाणं णवणउदिसागरोवमाणि देसूणदोहि पुव्वकोडीहि सादिरेयाणि आधाकम्मस्स उक्कस्संतरं। एवमिरियावथकम्मस्स। णवरि णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण छम्मासा। ओहि-णाणस्स वासपुधत्तं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। तवोकम्मस्स वि एवं चेवं। णवरि तवोकम्मस्स अंतरं एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि। अधवा, तवोकम्मस्स चोदालीसं सागरोवमाणि देसूण तीहि पुव्वकोडीहि सादिरेयाणि उक्कस्समंतरं। तं जहा -- एक्को देवो वा णेरइओ वा

पूर्वकोटिके आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। पुनः मनुष्यायुसे न्यून बाईस सागरकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँसे च्युत होकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। पुनः मनुष्यायुसे न्यून तथा गर्भसे लेकर अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्षकी आयुसे न्यून तीस सागरकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। अनन्तर वहाँसे च्युत होकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ गर्भसे लेकर आठ वर्ष होनेपर तीनों करणोंको करके क्षायिकसम्यग्दृष्टि हो गया। पुनः कुछ कम पूर्वकोटि काल तक अवधिज्ञानके साथ संयमका पालन कर तैंतीस सागरकी स्थितिवाला देव हो गया। पुनः वहाँसे च्युत होकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ इस पूर्वकोटिमें सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर क्षीणकषाय हो गया। उस क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पहले निर्जीर्ण हुए परमाणुओंके बन्धको प्राप्त होनेपर

अधःकर्मका अंतर प्राप्त होता है। इस प्रकार आभिनिबोधिक ज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंके कुछ कम दो पूर्वकोटि अधिक निन्यानवे सागर अधःकर्मका उत्कृष्ट अंतर होता है। इसी प्रकार ईर्यापथ कर्मका अन्तरकाल होता है। इतनी विशेषता है कि इसका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। किन्तु अवधिज्ञानीके उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्व है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। तपःकर्मका अन्तरकाल भी इसी प्रकार है। इतनी विशेषता है कि तपःकर्मका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटि अधिक तैंतीस सागर है। अथवा तपःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पूर्वकोटि अधिक चवालीस सागर है। यथा -- एक देव या नारकी वेदकसम्यग्दृष्टि जीव पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न

वेदगसम्माइट्ठी पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। गब्भादिअट्ठवस्साणमुवरि अधापवत्तकरणं अपुव्वकरणं च कादूण संजमं पडिवण्णो। तवोकम्मस्स आदी दिट्ठा। सव्वलहुमंतोमुहुत्तं संजमेण अच्छिदूण संजमासंजमं पडिवज्जिय अंतरिदो। देसूणपुव्वकोडिं संजमासंजमेण गमिय कालं कादूण बावीससागरोवमट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो समाणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। तत्थ देसूणपुव्वकोडिं संजमासंजममणुपालेदूण पुणो वि बावीससागरोवमट्ठिदियो देवो जादो। तत्थ कालं कादूण पुव्वकोडाउअमणुस्सो जादो। सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तावसेसे आउए संजमं पडिवण्णो। तवोकम्मस्स लद्धमंतरं। तदो कालं कादूण देवो जादो। एवं बेअंतोमुहुत्तब्भहियगब्भादिअट्ठवस्सेहि ऊणियाहि तीहि पुव्वकोडीहि सादिरेयाणि चोदालीसं सागरोवमाणि तवोकम्मस्संतरं। किरियाकम्मस्संतरे केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। तं जहा -- एक्को अप्पमत्तो किरियाकम्मेण अच्छिदो। पुणो अपुव्वो होदूण अंतरिदो। तदो णिद्दा-पयलाणं बंधवोच्छेदअणंतर (*का प्रतौ 'अण्णंतर--' इति पाठः) समए चेव मदो देवो जादो (* अ आ का प्रतिषु 'मदो जादो' इति पाठः)। किरियाकम्मस्स अंतोमुहुत्तमेत्तं जहण्णेण लद्धमंतरं होदि। उक्कस्सं पि अंतरमंतोमुहुत्तमेत्तं चेव। तं जहा -- एक्को अप्पमत्तो किरियाकम्मेण अच्छिदो। अपुव्वो होदूण अंतरिदो। तदो सव्वदीहेहि कालेहि अपुव्व-अणियट्टि-सुहुम-उवसंतगुणट्ठाणाणि गमिय पुणो ओदरमाणो

हुआ। गर्भसे लेकर आठ वर्षका होनेपर अधःप्रवृत्तकरण और अपूर्वकरण करके संयमको प्राप्त हुआ। तपःकर्मकी आदि दिखाई दी। अनन्तर सबसे लघु अन्तर्मुहूर्त काल तक संयमके साथ रहकर संयमासंयमको प्राप्त हो उसका अन्तर किया। फिर कुछ कम पूर्वकोटि काल संयमासंयमके साथ बिताकर और मरकर बाईस सागरकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। फिर वहाँसे मरकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयमासंयमका पालन कर फिर भी बाईस सागरकी आयुवाला देव हुआ। वहाँसे मरकर पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य हुआ और आयुमें सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर संयमको प्राप्त हुआ। इस प्रकार तपःकर्मका अन्तर प्राप्त हो गया। अनन्तर मरकर देव हो गया। इस प्रकार गर्भसे लेकर आठ वर्षमें दो अन्तर्मुहूर्त मिलानेपर जो काल हो उससे न्यून पूर्वकोटि अधिक चवालीस सागर तपःकर्मका अन्तरकाल होता है। क्रियाकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। यथा -- एक अप्रमत्त जीव क्रियाकर्मके साथ स्थित है। पुनः अपूर्वकरण होकर उसने उसका अन्तर किया। फिर निद्रा और प्रचलाकी बन्धव्युच्छित्ति होनेके अनन्तर समयमें ही वह मरा और देव हो गया। इस तरह क्रियाकर्मका अन्तर्मुहूर्त मात्र जघन्य अन्तरकाल उपलब्ध होता है। उत्कृष्ट अन्तरकाल भी अन्तर्मुहूर्त मात्र ही होता है। यथा -- एक अप्रमत्त जीव क्रियाकर्मके साथ स्थित है। पुनः अपूर्वकरण होकर उसने उसका अन्तर किया। अनन्तर सबसे दीर्घकाल द्वारा अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय और उपशान्तमोह गुणस्थानोंको बिताकर पुनः उतरते हुए

सुहुमो अणियट्टी अपुव्वो होदूण अप्पमत्तो जादो। लद्धं किरियाकम्मस्स उक्कस्संतरं। णवरि जहण्णंतरादो एदमुक्कस्संतरं संखेज्जगुणं।

मणपज्जवणाणीसु पओअकम्म-समोदाणकम्म-तवोकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा (* का ता प्रत्योः 'देसूणा पुव्वकोडी' इति पाठः।)। तं जहा -- एक्को देवो वा (* अ आ का प्रतिषु 'देवो जादो वा' इति पाठः।) णेरइयो

वा वेदगसम्माइट्ठी पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। गब्भादिअट्ठवस्साणमुवरि संजमं पडिवज्जिय मणपज्जवणाणी जादो। तस्स मणपज्जवणाणिस्स पढमसमए जे णिज्जिण्णा ओरालियखंधा तेसिं बिदियसमए आदी होदि। तदियसमयप्पहुडि अंतरं होदूण पुव्वकोडिचरिमसमए पुव्वणिज्जिण्ण(* अ आ का प्रतिषु 'पुव्वकोडीणिज्जिण्ण-- ' इति पाठः।)ओरालियखंधेसु बंधमागदेसु आधाकम्मस्स लद्धमुक्कस्समंतरं। एवं तीहि समएहि अंतोमुहुत्तब्भहियअट्ठवासेहि य ऊणा पुव्वकोडी आधाकम्मस्स उक्कस्संतरं। इरियावथकम्मस्स वि एवं चेव। णवरि कोइ वि विसेसो जाणिय वत्तव्वो। किरियाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं।

संजमाणुवादेण संजदाणं मणपज्जवणाणिभंगो। सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदाणं

सूक्ष्मसाम्पराय, अनिवृत्तिकरण और अपूर्वकरण होकर अप्रमत्तसंयत हो गया। इस तरह क्रियाकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल हो गया। इतनी विशेषता है कि जघन्य अन्तरकालसे यह उत्कृष्ट अन्तरकाल संख्यातगुणा है।

मनःपर्यय ज्ञानियोंमें प्रयोगकर्म, समवदान कर्म और तपःकर्मका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम पूर्वकोटि है। यथा -- एक देव या नारकी वेदकसम्यग्दृष्टि जीव पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और गर्भसे लेकर आठ वर्षका होनेपर संयमको प्राप्त कर मनःपर्ययज्ञानी हो गया। उस मनःपर्यय- ज्ञानीके प्रथम समयमें जो औदारिक स्कन्ध निर्जीर्ण हुए उनकी अपेक्षा दूसरे समयमें अधःकर्मकी आदि होती है और तीसरे समयसे अन्तर होकर पूर्वकोटिके अन्तिम समयमें पूर्व निर्जीर्ण औदारिक स्कन्धोंके बन्धको प्राप्त होनेपर अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल उपलब्ध होता है। इस तरह तीन समय और अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्ष कम पूर्वकोटि अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है। ईर्यापथकर्मका भी इसी प्रकार अन्तरकाल होता है। इतना विशेष है कि जो कुछ विशेषता है वह जानकर कहनी चाहिए। क्रियाकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।

संयम मार्गणाके अनुवादसे संयतोंका कथन मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है। सामायिक और

अप्पप्पणो पदाणमेवं चेव। णवरि इरियावथकम्मं णत्थि। किरियाकम्मस्स वि णत्थि अंतरं। एवं परिहार०। णवरि एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण वासपुधत्तब्भहियतीसवस्सेहि ऊणा पुव्वकोडी। तं जहा -- एक्को देवो वा णेरइयो वा वेदगसम्माइट्ठी पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। तदो सव्वसोक्खसंजुत्तेण तीसवस्साणि पुरे (* आ का प्रत्योः 'पुव्वे', ता प्रतौ 'पुव्वं' इति पाठः।) गमेदूण तदो सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमाणमेगदरं पडिवण्णो। पुणो वासपुधत्तेण पच्चक्खाणणामधेयपुव्वं पढिदूण (* अ आ का प्रतिषु 'पडिदूण' इति पाठः।) केवलिपादमूले परिहारसुद्धिसंजमं पडिवण्णो। तस्स परिहारसुद्धिसंजदस्स पढमसमए जे णिज्जिण्णा ओरालियखंधा तेसिं बिदियसमए आधाकम्मस्स आदी होदि। तदियसमयप्पहुडि ताव अंतरं जाव (* अ प्रतौ 'जाव अंतरं ताव' इति पाठः।) परिहारसुद्धिसंजददुचरिमसमओ त्ति। तदो परिहारसुद्धिसंजदचरिमसमए पुव्वणिज्जिण्णोरालिय-खंधेसु बंधमागदेसु आधाकम्मस्स लद्धमंतरं। एवं वासपुधत्तब्भहियतीसवस्सेहि ऊणिया पुव्वकोडी आधाकम्मस्स उक्कस्समंतरं।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं पओअकम्म-समोदाणकम्म-तवोकम्माणं अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण छम्मासा। एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं।

छेदोपस्थापनाशुद्धि संयतोंका अपने अपने पदोंका कथन इसी प्रकार है। इतनी विशेषता है कि इनके ईर्यापथकर्म नहीं है तथा क्रियाकर्मका भी अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार परिहारविशुद्धि-संयतोंके कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अधःकर्मका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्व अधिक तीस वर्ष न्यून पूर्वकोटि है। यथा -- एक देव या नारकी वेदकसम्यग्दृष्टि जीव मरकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। अनन्तर सब प्रकारके सुखसे संयुक्त होकर तीस वर्ष पहले बिताकर अनन्तर सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धि संयमोंमेंसे किसी एकको प्राप्त हुआ। पुनः वर्षपृथक्त्व काल

द्वारा प्रत्याख्यान नामक पूर्वको पढकर केवली जिनके पादमूलमें परिहारविशुद्धिसंयमको प्राप्त हुआ। उस परिहारविशुद्धिसंयतके प्रथम समयमें जो औदारिक स्कन्ध निर्जीर्ण हुए उनकी अपेक्षा दूसरे समयमें अधःकर्मकी आदि होती है और तीसरे समयसे अन्तर चालू होकर वह परिहारविशुद्धिसंयतके द्विचरम समयतक होता है। अनन्तर परिहारशुद्धिसंयतके अंतिम समयमें पूर्वनिर्जीर्ण औदारिक स्कन्धोंके बन्धको प्राप्त होनेपर अधःकर्मका अन्तरकाल उपलब्ध होता है। इस प्रकार वर्षपृथक्त्व अधिक तीस वर्ष न्यून पूर्वकोटि अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है।

सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयतोंके प्रयोगकर्म, समवदानकर्म और तपःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।

जहाक्खादसुद्धिसंजदाणं पओअकम्म-समोदाणकम्म-इरियावहकम्म-तवोकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तब्भहियअट्ठवस्सेहि ऊणा पुव्वकोडी। तं जहा -- एक्को खइयसम्माइट्ठी पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। गब्भाणअट्ठवस्साणमुवरि अधापवत्तकरणमपुव्वकरणं च कादूण अप्पमत्तभावेण सामाइय-छेदोवट्ठावणसंजमाणमेगदरं पडिवण्णो। तदो पमत्तो जादो। पुणो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण अपुव्वो अणियट्टी सुहुमो होदूण खीणकसाओ जहाक्खादसुद्धिसंजदो जादो। तस्स खीणकसायस्स पढमसमए जे णिज्जिण्णा ओरालियखंधा तेसिं बिदियसमए आधाकम्मस्स आदी होदि। तदियसमयप्पहुडि अंतरं होदूण तदो सजोगिचरिमसमए ओरालियखंधेसु बंधमागदेसु आधाकम्मस्स लद्धमंतरं। एवं तिसमयाहियअंतोमुहुतब्भहियगब्भादिअट्ठवस्सेहि ऊणिया पुव्वकोडी आधाकम्मस्स उक्कस्समंतरं।

संजदासंजदाणं पओअकम्म-समोदाणकम्म-किरियाकम्माणं णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं

पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण देसूणपुव्वकोडी। तं जहा -- एक्को मिच्छाइट्ठी अट्ठावीससंतकम्मिओ पुव्वकोडाउएसु समुच्छिमसण्णिपंचिंदियतिरिक्ख

यथाख्यातशुद्धिसंयतोंके प्रयोगकर्म, समवदानकर्म, ईर्यापथकर्म और तपःकर्मका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और आठ वर्ष कम एक पूर्वकोटि है। यथा -- एक क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। गर्भसे लेकर आठ वर्षका होनेपर अधःप्रवृत्तकरण और अपूर्वकरणको करके अप्रमत्तभावके साथ सामायिक और छेदोपस्थापना संयमोंमेंसे किसी एकको प्राप्त हुआ। अनन्तर प्रमत्त हो गया। पुनः प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानके हजारो परावर्तन करके अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्पराय होकर क्षीणकषाय यथाख्यातशुद्धिसंयत हो गया। उस क्षीणकषाय जीवके प्रथम समयमें जो औदारिक स्कन्ध निर्जीर्ण हुए उनकी अपेक्षा दूसरे समयमें अधःकर्मकी आदि होती है और तीसरे समयसे अन्तर होकर फिर सयोगीके अन्तिम समयमें औदारिक स्कन्धोंके बन्धको प्राप्त होनेपर अधःकर्मका अन्तरकाल उपलब्ध होता है। इस प्रकार तीन समय और अन्तर्मुहूर्त अधिक गर्भसे लेकर आठ वर्ष न्यून पूर्वकोटि अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है।

संयतासंयत जीवोंके प्रयोगकर्म, समवदान कर्म और क्रियाकर्मका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटि है। यथा -- अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक मिथ्यादृष्टि जीव पूर्वकोटिकी आयुवाले सम्मूर्च्छिम संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ।

पज्जत्तएसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो विस्संतो अधापवत्तकरणं अपुव्वकरणं च कादूण सम्मत्तं संजमासंजमं च पडिवण्णो। तत्थ संजदासंजदपढमसमए जे णिज्जिण्णा ओरालियखंधा तेसिं बिदियसमए आधाकम्मस्स आदी होदि। तदियसमयप्पहुडि अंतरं होदि। तदो संजदासंजदचरिमसमए पुव्वणिज्जिणणओरालियसरीरखंधेसु बंधमागदेसु लद्धमाधाकम्मस्स

उक्कस्समंतरं। एवं तिसमयादिएहि तीहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया पुव्वकोडी आधाकम्मस्स उक्कस्समंतरं। असंजदाणं तिरक्खोघो।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो। णवरि इरियावथकम्मस्स णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एग(* अ आ का ता प्रतिषु त्रुटितोऽयं कोष्ठकस्थः पाठो म प्रतितोऽत्र योजितः।)समओ, उक्कस्सेण छम्मासा। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण चक्खुदंसणट्ठिदी देसूणा। एवमचक्खुदंसणीणं। णवरि सगट्ठिदी भणिदव्वं। ओहिदंसणीणमोहिणाणिभंगो।

लेस्साणुवादेण किण्णलेस्साए पओअकम्म-समोदाणकम्माणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। आधाकम्मस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। तं जहा -- एक्को तिरिक्खो वा मणुस्सो वा अधो सत्तमाए पुढवीए

छह पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ। विश्राम किया । विशुद्ध हुआ। फिर अधःप्रवृत्तकरण और अपूर्वकरणको करके सम्यक्त्व और संयमासंयमको एक साथ प्राप्त हुआ। वहाँ संयतासंयत होनेके प्रथम समयमें जो औदारिक स्कन्ध निर्जीर्ण हुए उनकी अपेक्षा दूसरे समयमें अधःकर्मकी आदि होती है और तीसरे समयसे लेकर अन्तर होता है। अनन्तर संयतासंयतके अन्तिम समयमें पहले निर्जीर्ण हुए औदारिक शरीर स्कन्धोंके बन्धको प्राप्त होनेपर अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल उपलब्ध होता है। इस प्रकार तीन समय अधिक तीन अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्वकोटि अधःकर्मका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है। असंयतोंका कथन सामान्य तिर्यंचोंके समान है।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवालोंका कथन त्रस पर्याप्तकोंके समान है। इतनी विशेषता है कि ईर्यापथकर्मका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम चक्षुदर्शनकी स्थितिप्रमाण है। इसी प्रकार अचक्षुदर्शनवालोंके कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी स्थिति कहनी चाहिए। अवधिदर्शनवालोंका भंग अवधिज्ञानियोंके समान है।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यामें प्रयोगकर्म और समवदान कर्मका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। अधःकर्मका अन्तरकाल

कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक तैंतीस सागर है। यथा -- एक तिर्यंच या मनुष्य नीचे सातवीं पृथिवीकी नारकायुका